प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों ! इस बार 8 अप्रैल को हमारे प्यारे सदगुरुदेव संत श्री आसाराम जी बापू का अवतरण दिवस है, अत: इसी विषय पर हमारा आज का बाल संस्कार केंद्रित है ।

आज की कहानी में हम आपको बताएँगे बहुत वर्षों पहले एक त्रिकालदर्शी ज्ञानी ने पूज्य बापूजी के लिए क्या भविष्यवाणी की थी ? फिर संस्कृति सुवाष में हम जानेंगे कि जन्म दिवस और अवतार में क्या अंतर होता है ? मजेदार गतिविधि में हम सीखेंगे कि “संस्कृत में परिचय कैसे देंवें” ? फिर हम आपको ऐसी विधि बताएंगे कि बिना दवाई के शरीर की गर्मी कैसे दूर करें? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता, भजन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से हम सत्संग में सुनेंगे ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

एक त्रिकालज्ञानी की भविष्यवाणी

बच्चों, सैंकड़ों वर्ष पहले जूनागढ़, गुजरात के पास एक गाँव में ब्राह्मण दम्पत्ति रहते थे । वो भगवान शिव की पूजा अर्चना करते थे, उनके कोई संतान नहीं थी । उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन भगवान शिव ने ब्राह्मण को सपने में

दर्शन दिये और बोलेः “भक्तराज ! तुम्हारे भाग्य में संतान नहीं है, परन्तु मेरे आशीर्वाद से मेरा अंश तुम्हारे घर पुत्ररूप में पलेगा । कल सुबह मंदिर के फूलों में तुम्हें एक बालक मिलेगा । उसे ही अपनी संतान मानकर पालन-पोषण करना, वह बड़ा होकर त्रिकालज्ञानी बनेगा । “

सुबह पति-पत्नी दोनों बड़ी प्रसन्नता से मंदिर में पूजा कर ही रहे थे, कि इतने में किसी बालक के रोने की आवाज आयी । पास जाकर देखा तो फूलों के ढेर में एक नवजात शिशु लेटा है । ब्राह्मणी ने उस तेजस्वी बालक को तुरन्त गले से लगा लिया । सीने से लगाते ही माँ का वात्सल्य दूध बनकर फूट पड़ा । ब्राह्मण दम्पत्ति बच्चे को घर ले आये । गाँव के मुखिया ने कहाः “यह बालक देव का दिया हुआ है, इसलिए इसका नाम ‘देवो’ ही रखो ।” बालक संस्कृत के श्लोकों को सहज में ही याद कर लेता था । उसकी वाणी रहस्यमयी थी । कभी-कभी सुननेवालों को उसका रहस्य समझ में नहीं आता था । बालक बड़ा होकर ‘देवायत पंडित’ के नाम से सुप्रसिद्ध हुआ । देवायत पंडित ने कंई भविष्यवाणियाँ की । शताब्दियों पहले उन्होंने जो सबसे पहले भविष्यवाणी की थी वह यह थी - “कलयुग में पाप का दौर आएगा, धरती पापी जनों का भोग माँगेगी, इससे परस्पर लड़ाई झगड़े करेंगे, और उनका आधुनिक शस्त्रों से संहार होगा ।” पिछले कुछ वर्षो से जो विश्व भर में

जो मिशाइलों से हमले हुए, देश में दंगे हुए, यह उसी का संकेत है ।

उन्होंने आगे कहा “लोग अनजान महामारी और विविध प्रकार के रोगों से पीड़ित होकर मरेंगे, जहरीली हवाएं चलेगी, तूफान उठेंगे, कभी भूकंप, कभी बाढ़ आएगी और कभी अकाल से मनुष्य पीड़ित होंगे, नदियों का पानी सूख जायेगा।“

यह कोरोना, भोपाल गैस कांड, केदारनाथ में आई बाढ़, गुजरात में आए भूकंप, सुनामी और परमाणुबम विस्फोट के बाद बनने वाले वातावरण का संकेत है।

उन्होंने आगे लिखा, “ऐसे समय में लोग ऐसा मानने लगेंगे कि ‘धर्म ग्रंथ झूठे हैं’ । परंतु यह सिद्धांत है कि जब जब धर्म की हानि होती है तब तब भगवान स्वयं अवतार लेकर इस धरती पर धर्म की स्थापना करते हैं । उत्तर दिशा से भगवान संत के रूप में आयेंगे, साबरमती के तट पर आसन जमायेंगे, वहाँ अच्छाई और बुराई के बीच संग्राम होगा, वे बुराई को मारकर निष्कलंक नाम धारण करेंगे । ऐसा समय आयेगा कि सौ-सौ गाँव की सीमा में रहने वाले लोग उनके सानिध्य में एक साथ हो जायेंगे, और कांकरिया तालाब के पास बड़े तम्बू तानकर रहेंगे। उस समय की वे घड़ियाँ बड़ी रमणीय होंगी । सूर्य अपनी 16 कलाओं से सम्पन्न तथा धरती खुशहाल होगी । कलियुग

होगा फिर भी सत्य के आग्रही सच्चे संतों के तपोबल से सत्ययुग जैसा समय आयेगा । ऐसे भविष्य के लक्षण हैं ।“

बच्चों, क्या आप समझे कि यह भविष्यवाणी किसके बारे में थी? जी हां, अपने ही प्यारे सदगुरुदेव पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के बारे में। गुरुदेव ने सिंध प्रांत में अवतार लिया, जो कि भारत के उत्तर दिशा में है। उस समय अहमदाबाद का नाम ‘कर्णावती’ था, वह नाम बाद में बदल जायेगा यह बात देवायत पंडित जी जानते थे, इसलिए उन्होंने ‘कर्णावती नगर’ के बदले ‘कांकरिया तालाब’ का नाम दिया ।

आश्रम के ‘ध्यानयोग शिविर’ में देश के अनेक गाँवों और शहरों के लोग एक होकर आत्मोन्नति के लिए सम्मिलित हो जाते हैं। पूज्य बापूजी एवं उनके शिष्यों द्वारा देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए विरोधी शक्तियों के साथ पिछले कई दशकों से सतत संघर्ष किया जा रहा है। सभी जानते हैं कि सनातन धर्म संस्कृति की रक्षा करने के लिए बापू जी 60 सालों से लगे हुए हैं। आज पाश्चात्य जगत की शक्तियाँ भारत की संस्कृति, संस्कार व परम्पराओं को नष्ट करने लगी हैं। पूज्य बापूजी अनेक प्रकार के झूठे आरोप सहकर भी संस्कृति की रक्षा में अपने करोड़ों साधकों को साथ लेकर लगे हुए हैं। वे तो कहते हैं कि ‘विश्वगुरु हो भारत प्यारा, ऐसा है संकल्प हमारा। अब निश्चित ही सुंदर सुहावना समय आयेगा। देवायत

पंडित की भविष्यवाणी आज भी पत्थर पर शिलालेख के रूप में गुजराती भाषा में अंकित है।

सामुद्रिक शास्त्र के एक प्रसिद्ध विद्वान ने पूज्य बापू जी के श्रीचरणों और करकमलों का अवलोकन करके कहा कि "पूज्य बापू जी पहले 16 बार अवतार ले चुके हैं, और अब 17वीं बार हम लोगों के बीच धर्म की पुनर्स्थापना करने के लिए आये हैं। "

हम लोगों के उद्धार के लिए जिन्होंने इतने कष्ट सहे, ऐसे प्यारे सद्गुरुदेव के श्री चरणों में बारंबार कोटि-कोटि प्रणाम ।

सब कुछ दीन्हा आपने, भेंट धरूँ क्या नाथ ।
नमस्कार की भेंट धरूँ, जोड़ के दोनों हाथ ।।

तो सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - श्री सदगुरुदेव भगवान की जय ।

4. भजन / पाठ

आज हम बापूजी के अवतरण दिवस विशेष भजन गायेंगे -
अवतरण दिवस का वंदन है... !!

https://youtu.be/7d4aT25iRuU

5. ज्ञान का चुटकुला

चिंटू अपने दोस्तों से - यारों, सुबह जल्दी उठकर घूमना सेहत के लिए अच्छा होता है, इसलिए कल से आप सब लोग जल्दी उठकर मेरे घर आ जाना, हम सब मिलकर घूमने चलेंगे ।

अगली सुबह चिंटू के सभी दोस्त आ गए और बोले - अरे चिंटू तुम अभी तक सो रहे हो, तुमने तो कहा था कि हम जल्दी उठकर घूमने चलेंगे ।

चिंटू (सोते हुए) - अरे यार, जब पूरी पृथ्वी ही घूम रही है, तो हमें घूमने की क्या जरूरत है? जाओ तुम लोग भी जाकर सो जाओ !!

सीख: - बहाने मार कर आलसी नहीं बनना चाहिए । सुबह जल्दी उठकर घूमना सेहत के लिए अच्छा होता है ।

6. संस्कृति सुवास :-

जन्म और अवतार में अंतर

बच्चों, भारत भूमि अनादि काल से ही संतो-महात्माओं और अवतारी महापुरुषों की चरणरज से पावन होती चली आ रही है । यहाँ कभी मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम अवतरित हुए तो कभी लोकनायक श्रीकृष्ण, कभी भगवान बुद्ध, कभी सूरदास, तुलसीदास, रैदास, मीरा, एकनाथ, नामदेव, कबीर, नानक, रामतीर्थ, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, रमण महर्षि, माँ आनंदमयी, स्वामी लीलाशाहजी महाराज, और वर्तमान में है श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ।

साधारण जीव का जन्म कर्मबन्धन से होता है । पूर्वजन्म के जो कर्म होते है उसी के अनुरूप उन्हें जन्म मिलता है । परंतु भगवान या संत-महापुरुषों का धरती पर आना जन्म लेना नहीं अपितु अवतरित होना कहलाता है । भगवान या संत महापुरुष लोगों का मंगल करने के लिए, धर्म की स्थापना करने के लिए या किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए धरती पर आते है । अथवा जब लाखों-लाखों लोग करूण पुकार लगाते है तब अवतरित होते है । जब जब भगवान या संत का अवतार होता है, वो ये ही सन्देश देते है, कि आप भी 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' कार्य करके स्वयं परमात्मा में विश्रांति पा लो।

समय बहुत तेजी से बीत जाता है, अपना विवेक जगाओ और उत्थान कर लो । अनादि काल से सृष्टि चली आ रही है, राम थे तब भी तुम थे, कृष्ण थे तब भी तुम थे, सृष्टि के आदि में तुम थे, मध्य में तुम थे, अब भी तुम हो और प्रलय हो जायेगा तब भी तुम्हारा नाश नहीं होता है । इस प्रकार का ज्ञान पाकर मुक्त हो जाओ ।

7. योग

शीतली प्राणायाम

बच्चों, आज हम आपको एक ऐसी विधि बताते है जिससे बिना किसी दवाई से शरीर की गर्मी कम हो जाती है, शरीर शीतल और मन शांत हो जाता है, आँखों की जलन में आराम मिलता है भूख-प्यास नियंत्रित होती है और पाचनशक्ति बढ़ती है । वह है शीतली प्राणायाम । आइये जानते हैं इसे कैसे करे -?

सीधे बैठकर दोनों हाथ घुटनों पर ज्ञानमुद्रा में रखें, नेत्रों को कोमलता से बंद करें। अब मुँह खोलकर होठों को

‘ओ’ (0) के आकार में लायें व जिह्वा को होठों से बाहर निकालें और लम्बाई में मोड़ दें फिर उसमें से श्वास अंदर लें, जैसे आप किसी नली से वायु पी रहे हों। फेफड़ों को वायु से पूर्णतया भर लेने के बाद जिह्वा को सामान्य स्थिति में लाकर मुँह बंद कर लें। ठोड़ी को कंठकूप पर दबाकर जालंधर बंध करें । मूलबंध के साथ श्वास को 5 से 10 सेकंड तक रोके रखें । बाद में दोनों नथुनों से धीरे-धीरे श्वास छोड़ दें। यह एक शीतली प्राणायाम हुआ। इस प्रकार तीन प्राणायाम करें । धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाते हुए इसे 5-7 बार तक कर सकते हैं ।

सावधानियाँ : शीतली प्राणायाम सर्दियों में नहीं करना चाहिए। जिसको BP, खाँसी हो उसे नहीं करना चाहिए। इसे ज्यादा भी नहीं करना चाहिए, अन्यथा भूख कम हो जाएगी।

8. साखी :-

तरुवर सरोवर संतजन, चौथा बरसे मेह ।
परमारथ के कारने, चारों धरिया देह ।।

9. गतिविधि

“संस्कृत में परिचय कैसे देंवें”-

यह सीखने के बाद सभी छात्र दो दो के ग्रुप में खड़े होकर एक एक दूसरे से संस्कृत में परिचय पूछेंगे और उत्तर बताएंगे ।

मम परिचय: (पार्ट - 1)

आपका नाम क्या है ?

यदि आप किसी पुरुष को पूछते हैं - "आपका नाम क्या है" तो इसे संस्कृत में ऐसे पूछा जाता है - "भवत: नाम किम् ?"

और संस्कृत में ऐसे उत्तर दिया जाता है - "मम नाम गोपाल: अस्ति " अर्थात मेरा नाम गोपाल है ।

परन्तु यदि आप किसी स्त्री से को पूछते हैं तो ऐसे पूछा जाता है - "भवत्या: नाम किम् ?"

और संस्कृत में ऐसे उत्तर दिया जाता है - "मम नाम राधा अस्ति।"

यहाँ संस्कृत में "भवत:" शब्द पुलिंग के लिए और "भवत्या:" शब्द स्त्रीलिंग के लिए उपयोग होता है ।

आप कैसे हैं ?

आप किसी पुरुष को पूछते हैं - "आप कैसे हैं ?

तो इसे संस्कृत में ऐसे पूछा जाता है - "भवान् कथम् अस्ति ?

परन्तु यदि आप किसी स्त्री से को पूछते हैं ऐसे पूछा जाता है - "भवती कथम् अस्ति?"

और संस्कृत में ऐसे उत्तर दिया जाता है -अहं कुशलम्, या कुशली अस्मि - यानि "मैं ठीक हूँ "।

यहाँ संस्कृत में " भवान्:" शब्द पुलिंग के लिए और " भवती:" शब्द स्त्रीलिंग के लिए उपयोग होता है

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

" बालक आसुमल ने किस विषय का गहन अध्ययन किया" ?

विकल्प है -

A) हिंदी

B) संस्कृत

C) विज्ञान

D) गणित

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

होली महोत्सव की पूरी कहानी और वैज्ञानिक महत्त्व...
https://youtu.be/W7wFjBSZOko?list=PLbBmiOH-57U6gIBsxoqC8RhSPGWzzQb-Y

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- कहानी के अनुसार ब्राह्मण दंपति को स्वप्न में शिव जी ने क्या आशीर्वाद दिया?
- देवायत पंडित की सबसे पहले भविष्यवाणी क्या थी?
- भविष्यवाणी के अनुसार कलियुग में लोगों के क्या लक्षण होंगे?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- साधारण जीव का जन्म क्यों होता है?
- भगवान या संत का अवतार क्यों होता है?
- भारत भूमि पर जन्मे किन्हीं पांच संतो के नाम बताओ.
- पूज्य गुरुदेव का अवतरण दिवस किस तिथि को आता है?
- शीतली प्राणायाम कैसे करना चाहिए?
- शीतली प्राणायाम करने से क्या लाभ होता है?

- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

दीपज्योति एवं आरती -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्‌गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है -

[B] मूल ग्रंथ अध्ययन के हेतु, **संस्कृत** भाषा है एक सेतु ।

संस्कृत की शिक्षा पायी, गति और साधना बढ़ायी ।।

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका) :-

हरि ॐ बच्चों, 13 अप्रैल को श्री वल्लभाचार्यजी की जयंती है जिन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय (पुष्टि मार्ग) की स्थापना की थी । तो आज के बाल संस्कार में हम सुनेंगे एक बच्चे की कहानी जिसने वल्लभाचार्यजी कि कृपा से ईश्वर को पा लिया ।

स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे कि हमें कैसे कपडे पहनने चाहिए ? आज कि गतिविधि में हम सीखेंगे संस्कृत भाषा का प्रयोग । इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे- विद्यार्थियों में कैसी भी गंदी आदत हो - उन्हें दूर करने का उपाय ।

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

बूला मिश्र को ईश्वरप्राप्ति

बूला मिश्र का जन्म लाहौर के एक सारस्वत ब्राह्मण के घर हुआ था । 10 वर्ष की उम्र में वह शास्त्राध्ययन के लिए काशी गया ।

उसे 3 साल तक पढ़ाने के बाद उसके आचार्य ने कहा : ''मैंने कई विद्यार्थियों को पढ़ाया परंतु तेरे जैसा ठूँठ मैंने आज तक नहीं देखा । लगता है तेरे भाग्य में विद्या है ही नहीं । मैं अब तुझे नहीं पढ़ा सकता ।''

बूला मिश्र ने संकल्प किया कि 'जब तक मुझे विद्या प्राप्त नहीं होगी, तब तक मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा । गंगा-किनारे जाकर वह 3 दिन तक भूखा-प्यासा बैठा रहा ।

बालक की तपस्या से माँ सरस्वती प्रकट हुईं, बोलीं : ''वत्स ! तेरे भाग्य में विद्या नहीं है । परंतु तू भगवान का भजन कर, उनकी कृपा से तू अवश्य विद्यावान हो जायेगा ।''

बूला मिश्र बोला : ''मैं अब तक आपके लिए तड़प रहा था तो अब भगवान के लिए तड़पूँगा ।'' अब वह वहीं बैठकर पूरी श्रद्धा

से भगवन्नाम-जप करने लगा । भगवान प्रसन्न हुए, सरस्वतीजी को भेजा ।

बूला मिश्र बोला : ''आपने तो कहा था कि 'तेरे भाग्य में विद्या नहीं है', अब क्या हुआ ?''

सरस्वतीजी : ''सच्चे मन से भगवन्नाम का जप करने से भगवान तुझ पर प्रसन्न हुए हैं और तेरे भाग्य के कुअंक मिट गये हैं ।''

बूला मिश्र बोला : ''भगवान की प्रसन्नता से जब भाग्यहीन का भाग्य बदल सकता है तो अब मुझे विद्या नहीं चाहिए, मैं भगवान को ही पाऊँगा ।''

पाँच दिन निकल गये थे । बूला मिश्र ने जल तक नहीं लिया । उसके दृढ़ संकल्प व सच्ची तड़प से प्रसन्न होकर भगवान ने साकाररूप में दर्शन दिये ।

भगवान बोले : ''वत्स ! मेरे दर्शन का परम फल यही है कि जीव अपने आत्मस्वरूप में जग जाय, आत्मविश्रांति पा लें । परंतु गुरुकृपा के बिना यह सम्भव नहीं है । मैं भी जब अवतार लेकर आता हूँ तो मुझे भी ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु की शरण में जाना पड़ता है । अतः तू अडेल जा, वहाँ तुझे वल्लभाचार्यजी मिलेंगे ।''

बूला मिश्र प्रसन्नतापूर्वक भोजन करके अडेल पहुँचा । वहाँ वल्लभाचार्यजी को देखते ही दंडवत् पड़ गया । आचार्य श्री प्रसन्न होकर बोले : ''तू धन्य है ! तूने दृढ़ हरिभक्ति से भगवान को भी प्रकट कर दिया ।''

बूला मिश्र : ''गुरुदेव ! भगवान के दर्शन तो हो गये परंतु भगवत्स्वरूप के आनंद का अनुभव तो नहीं हुआ । इसीलिए मैं आपकी शरण में आया हूँ, मुझे स्वीकार कीजिये ।''

उसकी निष्ठा और विवेक देखकर वल्लभाचार्यजी ने उसे मंत्रदीक्षा दी । जिस बूला मिश्र को अक्षरज्ञान तक नहीं था, वह गुरुमंत्र के जप और गुरुसेवा से वेद-शास्त्रों के ज्ञान में निपुण व अलौकिक अनुभवों का धनी होने लगा ।

ईश्वरप्राप्ति की तीव्र तड़प और गुरुजी की कृपा से शीघ्र ही बूला मिश्र को ईश्वर-तत्त्व का साक्षात्कार हो गया ।

बूला मिश्र तो विद्या पाने के लिए घर से निकला था, तितिक्षा सही, बहुत कष्टदायक लम्बी यात्रा के बाद भगवान के दर्शन हुए, भगवान प्रसन्न हुए तब उसे गुरु मिले और भगवान के तत्त्व का साक्षात्कार हुआ । परंतु जो सीधे ऐसे हयात ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों को खोजकर उनकी शरण में पहुँच जाते हैं, उनके सौभाग्य का तो कहना ही क्या !

और जो ऐसे महापुरुषों के वचनों में अडिग श्रद्धा करके बूला मिश्र से भी सरलता से आत्मानुभव कर लेते हैं, ऐसे सौभाग्यशालियों को तो आपके-हमारे प्रणाम हैं !

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ।
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ।।
(गुरुग्रंथ साहिब)

उन महादुर्लभ ब्रह्मज्ञानी सद्गुरुओं का बड़ा उपकार है । ब्रह्मज्ञान से सर्वथा अनजान लोग, जो संसारी छोटी-छोटी चाहें और मान्यताएँ लेकर उनके पास आते हैं, उन्हें भी ये करुणावान महापुरुष हँसते-खेलते, खाते-पहनते आत्मज्ञान का खजाना देकर मुक्ति-मार्ग की यात्रा कराते हैं ।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

टीचर- चिंटू, तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?

चिंटू - सर, कल मैं सपने में अमेरिका चला गया था ।

टीचर - ठीक है, पिन्टू तुम क्यों नहीं आए?

पिन्टू - सर, मैं चिंन्टू को एयरपोर्ट छोड़ने गया था ।

सीख : पढाई में नियमित रहना चाहिए । फालतू बहाने नहीं बनाना चाहिए ।

5. श्लोक :-

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥

आपके अधर मधुर हैं, आपका मुख मधुर है, आपकी ऑंखें मधुर हैं, आपकी मुस्कान मधुर है, आपका हृदय मधुर है, आपकी चाल मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥

आपका बोलना मधुर है, आपके चरित्र मधुर हैं , आपके वस्त्र मधुर हैं, आपका तिरछा खड़ा होना मधुर है , आपका चलना मधुर है, आपका घूमना मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥ २ ॥

(श्री वल्लभाचार्य विरचित 'मधुराष्टकम' से...)

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- **"**एक महान संत, दार्शनिक और पुष्टिमार्ग के प्रणेता कौन थे, जिन्होंने शुद्धाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया **?"**

विकल्प है -

A) संत नामदेव जी

B) श्री वल्लभाचार्य जी

C) संत रविदास जी

D) श्री केशवराम जी

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. क्या करें, क्या नहीं ?

परीक्षा के दिनों में क्या करें क्या न करें -

बच्चों., अभी आप सबके परीक्षाओं के दिन आ गए हैं क्या आपको पता है, परीक्षा के दिनों में अच्छे अंको से पास होने के लिए क्या करना चाहिए?

पढ़ने के पहले एक मिनट ध्यान में स्थिर हो जाओ, ज्ञानमुद्रा में दोनों हाथ घुटनों पर रखो, जीभ थोड़ी-सी बाहर कर भगवान या सद्‌गुरु के ध्यान में 1-2 मिनट बैठ जाओ। बुद्धि के मालिक देव सूर्यनारायण, विद्‌या के दाता भगवान शिवजी, सरस्वती माता, सद्‌गुरु का सुमिरन कर पढ़ाई शुरु करो ।

जो पढ़ा उस पर मन-ही-मन खूब गौर किया, विचार किया, एक-आधा मिनट शांत हो जाओ, इससे पढ़ा हुआ याद रहेगा ।

परीक्षा में जाते समय थोड़ा दहीं और मिश्री मिलाकर प्रसाद की तरह खा लेना चाहिए । इसे शुभ शकुन माना जाता है ।

माथे पर केसर, हल्दी-चन्दन का मिश्रण या तुलसी की जड़ की मिट्टी का तिलक करके ही घर से निकलना चाहिए ।

परीक्षा देते समय पहले प्रश्नपत्र के सारे प्रश्न पढ़ लेने चाहिए, फिर जो सरल लगें उन प्रश्नों के उत्तर लिखना चालू करें ।

सरल-सरल प्रश्नों के उत्तर लिखने के बाद फिर जो कठिन लगे उन पर जायें और चिंतन करें, कठिन-कठिन कुछ नहीं है, हरि ॐ... हरि ॐ... जहाँ तिलक करते हैं वहाँ स्पर्श करके माँ सरस्वती को, भगवान शिव को, रामजी को, सद्गुरुदेव को... जिनमें श्रद्धा है उनको याद करें, 'ॐॐॐॐ विद्यां देहि । ॐॐॐॐ स्मृतिं देहि । ॐॐॐॐ साहसं देहि, मेरी बुद्धिशक्ति का विकास हो, मुझसे जरुर कठिन प्रश्न सरल होंगे' ऐसा

चिंतन करते हुए एक मिनट शांत हो जाए, ऐसा करने से कठिन क्या, कठिन का बाप भी तुम्हारे आगे सरल हो जायेगा और अच्छे अंकों से पास हो जाओगे।

8. गतिविधि :-

"संस्कृत में परिचय कैसे देंवें"-

यह सीखने के बाद सभी छात्र दो दो के ग्रुप में खड़े होकर एक एक दूसरे से संस्कृत में परिचय पूछेंगे और उत्तर बताएंगे ।

मम परिचय: (पार्ट - २)

आपके पिता का नाम क्या हैं ?

आप किसी पुरुष को पूछते हैं आपके पिता का नाम क्या हैं ?

तो इसे संस्कृत में ऐसे पूछा जाता है - "पितु: नाम किम् ?"

और संस्कृत में ऐसे उत्तर दिया जाता है - ????

आप कौनसी कक्षा पढ़ते हैं?

आप किसी पुरुष को पूछते हैं - आप कौनसी कक्षा पढ़ते हैं?

तो इसे संस्कृत में ऐसे पूछा जाता है -

पुरुष को - भवान् कस्यां कक्षायां पठति ?

स्त्री को - भवती कस्यां कक्षायां पठति ?

और संस्कृत में ऐसे उत्तर दिया जाता है -

अहं ... प्रथम/द्वितीय/तृतीय/चतुर्थ/पंचम/षष्ठी/ सप्तम/अष्टम/नवम/ दशम/एकादश/ द्वादश.....कक्षायां पठामि ।

9) भजन :-

अब सभी बच्चे गाएंगे प्यारा सा भजन -

हमें संस्कार मिले, हमें गुरुद्वार मिले...

https://youtu.be/C7I9kSRPRTQ

10) स्वास्थ्य सुरक्षा :-

- कृत्रिम (सिंथेटिक) वस्त्र न पहनें ।
- बहुत कसे हुए, नायलोन आदि कृत्रिम तंतुओं से बने हुए तथा चटकीले-भड़कीले गहरे रंग के कपड़े तन-मन के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं व जीवनी शक्ति का ह्रास करते हैं ।
- तंग कपड़ों से रोमकूपों को शुद्ध हवा नहीं मिलती व रक्त-संचरण में बाधा पड़ती है ।
- ढीले-ढाले सूती वस्त्र स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम होते हैं ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम सुनेंगे पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी ...

(विद्यार्थियों में कैसी भी गंदी आदत हो - बस इसे ध्यान से सुनें ।)

https://youtu.be/jfFH14US3JQ

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- बुला मिश्र कैसा बच्चा था?
- बुला मिश्र ने सरस्वती माँ कि उपासना क्यों की ?
- भाग्यहीन का भाग्य कैसे बदल सकता है ?
- बुला मिश्र वल्लभाचार्यजी के पास क्यों गया ?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के लिए क्या करना चाहिए ?
- मधुराष्टकम के रचयिता कौन है ?
- बहुत कसे हुए, नायलोन कपडे पहनने से क्या नुकशान होता है ?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति :-

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

B) श्री वल्लभाचार्य जी ****